ॐ साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।

सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख की युवा अवस्था की युक्ति

सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के वचन हैं कि सब सजन अब बैरूनी वृत्ति को छोड़ कर अन्दरूनी वृत्ति को धारण करें और महाराज जी के साथ जुड़े रहें। यह वचन बार-बार हर सभा में दोहराये जायें, ताकि सभा का हर सजन इन्हें प्रवान करने योग्य बने। सब सजन सभा में आँखें बन्द करके बैठें, ताकि ध्यान जुड़ा रहे और टूटने न पावे। जो सजन सभा में वृत्ति लगा कर खलबली मचाते हैं वह बिलकुल बन्द हो गई है अब जो सजन तीन बार मना करने पर भी काबू में नहीं आवेंगे उन को कहा जावेगा कि वह घर बैठें उन को सभा में आने की आज्ञा न होगी।

सजनों सुरत क्या है ? सुरत है अन्दर का अपना ख्याल जो कि स्त्री भाव में नज़र आता है। यह सुरत महाराज जी के साथ बातें करती है। उन को कई तरीकों से रिझाती है, वहाँ शरीर का कोई सवाल नहीं। जैसे-जैसे अपने स्वभावों को पकड़ते जावेंगे वैसे-वैसे सुरत कंचन होती जावेगी तब आपका घाटा पूरा होगा और आप कामयाब हो सकेंगे। वरना यत्न करने पर भी आप कामयाब नहीं हो सकेंगे। सुरत स्त्री है। वह महाराज जी के साथ मेल खा कर सब कुछ देख सकती है। जब आप महाराज जी के साथ मेल खा जावेंगे, तब फिर आप आकाशों आकाश, पातालों पाताल देख सकेंगे। इस युक्ति पर चलने से आप पूरे कामयाब हो जावेंगे।

सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर गृहस्थ आश्रम की (घरेलू बातों की) कचहरी बन्द हो गई है। घरेलू बातें अब नहीं सुनी जावेंगी। अब कचहरी लगेगी सम, सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म की। सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म, यह चार सवाल हैं जो कि धारण करके हल करने हैं। यह है सब सजनों की पढ़ाई - जो कि माह चैत्र तक समाप्त करनी है और पास होना है। यह सवाल हल करने पर आप सम पर खड़े हो जावेंगे। फिर आप देखेंगे कि जेहड़ा मन मन्दिर प्रकाश ओही असलियत ब्रह्म स्वरूप है मेरा अपना आप। इस एक शब्द पर फिर पाँच साल गुढ़ना है। इस पर परिपक्क होने पर आप की दिव्य दृष्टि होगी और आप तीन कालों की पहचान कर सकेंगे।

सजनों भक्ति पहले बाल अवस्था में थी। जब से समभाव समदृष्टि की पढ़ाई आई है, भक्ति युवा अवस्था में आ गई है। इसलिए बैरूनी वृत्ति अब शोभा नहीं देती। वृत्ति मौन की होनी चाहिए। मौन का नतीजा है विश्राम, खलबली को हटाते हुए सब सजन विश्राम पावें।

सजनों तुसां बालक नहीं नादान, हो तुसां हुन नौजवान ।
पा लवो आत्मिक ज्ञान, पावो विश्राम सजनों पावो विश्राम ।

ॐ

यह शब्द सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के मुख के हैं। ॐ

हुन अन्दर जुड़ो जी, बैरूनी छडो वृत्ति।
बैरूनी वृत्ति विच लाभ न कोई।
अन्दरूनी वृत्ति विच प्रसन्नता होई।
हुन प्रसन्नता होई जी बैरूनी छडो वृत्ति।
हुन अन्दर जुड़ो जी बैरूनी छडो वृत्ति।

सजनों काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को भी जीतना है। इन सब में बड़ा है काम। काम का परिवार है कामना। काम की दोस्ती है क्रोध से। यत्न कर कर के सजन हार गये। लेकिन जब कोई कामना पूरी न हुई तो क्रोध उत्पन्न होता है। लोभ का दोस्त है मोह, अगर किसी ने लालच दिखाया, तो उस के साथ सजनों का मोह पड़ जाता है। सब सजनों को मालूम ही है कि अहंकारता कुलनाशक है। जिस सजन को ब्रह्म से ब्रह्म होने की चाहना है तो उसने सम, सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म की पढ़ाई समाप्त करने के बाद फिर काम को जीतना है। आप सब सजन पढ़ चुके हैं कि ऋषि विश्वामित्र राज ऋषि, श्रेष्ठ ऋषि, उत्तम ऋषि और महाऋषि तो हो गये लेकिन ब्रह्म ऋषि न हो सके। वह यत्न तो लड़ाते थे लेकिन फिर गिर जाते थे। आखिर में जब उन्होंने काम को जीता, तो फिर वह ब्रह्म ऋषि की पदवी पर पहुंचे। इसलिए सजनों को चाहिए कि गृहस्थ आश्रम में रहते हुए आहिस्ता आहिस्ता अपनी इन्द्रियों पर कन्ट्रोल करके काम पर फ़तह पानी है।